Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 10

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

9 मार्च 2016 ई   9 जमादुस्सानी 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

मैं कुरआन और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुकरण से थोड़ा इधर उधर होना बेईमानी समझता हूँ। मेरा विश्वास यही है कि जो इसे कुछ भी छोड़ेगा वह जहन्नमी है। फिर इस आस्था को न केवल भाषणों में बल्कि साठ के करीब अपनी पुस्तकों में बड़ी स्पष्टता से परिभाषित किया है।

मैं सच कहता हूँ और ख़ुदा तआला की कसम खाकर कहता हूँ कि मैं और मेरी जमाअत मुसलमान है और वह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और कुरआन में इसी तरह ईमान लाती है जिस पर एक सच्चे मुसलमान को लाना चाहिए। मैं एक क्षण भी इस्लाम से बाहर कदम रखना मौत का कारण विश्वास करता हूँ।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

मैं अत्यधिक अफसोस और दर्द दिल से यह बात कहता हूं कि लोगों ने मेरे विरोध में न केवल जल्दी बल्कि बहुत ही बेरहमी भी की। केवल एक मस्ला वफात मसीह का अंतर था जिसे मैं क़ुरआन करीम और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत, सहाबा के सहमति और तर्कसंगत तर्क और पिछली पुस्तकें साबित करता था और करता हूँ और हनफ़ी धर्म के अनुसार आयतों, हदीस, क्यास, शरीयत के तर्क मेरे साथ थीं। मगर उन लोगों ने इससे पहले कि वह पूरे तौर पर मुझसे पूछ लेते और मेरे तर्क को सुन लेते इस मस्ला के विरोध में यहां तक बढ़े कि मुझे काफिर ठहराया गया और उसके साथ और भी जो चाहा कहा और मेरे ज़िम्मे लगाया। ईमानदारी, नेकी और तक्वा की मांग यह थी कि पहले मुझसे पूछ लेते। अगर मैं अल्लाह तआला के कथन और रसूल से बढ़ता तो फिर निसन्देह इन्हें अधिकार था कि वे मुझे जो चाहते कहते दज्जाल कज़्ज़ाब आदि। लेकिन जब कि मैं आरम्भ से बयान करता चला आया हूँ कि कुरआन और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुकरण से थोड़ा इधर उधर होना बेईमानी समझता हूँ। मेरा विश्वास यही है कि जो इसे कुछ भी छोड़ेगा वह जहन्नमी है। फिर इस आस्था को न केवल भाषणों में बल्कि साठ के करीब अपनी पुस्तकों में बड़ी स्पष्टता से परिभाषित किया है और दिन रात मुझे यह चिंता और विचार रहता है। तो अगर यह विरोधी ख़ुदा तआला से डरते तो क्या उनका कर्तव्य नहीं था कि अमुक बात इस्लाम से बाहर है। इसकी क्या वजह है या उसका आप क्या जवाब देते हैं। मगर नहीं। इसकी जरा भी परवाह नहीं की। सुना और काफिर कह दिया। मैं बहुत आश्चर्य से उनकी इस हरकत को देखता हूँ। क्योंकि एक तो जीवन तथा वफात मसीह का मस्ला कोई मस्ला नहीं जो इस्लाम में प्रवेश करने के लिए शर्त हो। यहाँ भी हिंदू या ईसाई मुसलमान होते हैं। मगर बताओ कि क्या उस से यह स्वीकार भी करवाते हो? सिवाय इसके कि اٰمنت باللہ وملائکتہٖ و کتبہٖ ورسلہٖ والقدر خیرہٖ وشرّہٖ من اللہ تعالیٰ والبعث بعد الموت जबकि यह मस्ला इस्लाम का अंग नहीं तो भी मुझ पर वफात मसीह की घोषणा से इस कदर हिंसा क्यों की गई कि यह काफ़िर हैं दज्जाल हैं उन्हें मुसलमानों के कब्रिस्तान में दफन नहीं किया जाए। इनके माल लूट लेने वैध हैं और उनकी महिलाओं को बिना निकाह घर में रख लेना सही है। उन्हें मार देना पुण्य का काम है आदि आदि। एक तो वो ज़माना था कि यही मौलवी शोर मचाते थे कि अगर 99 कारण कुफ्र के हों और एक कारण इस्लाम का हो तब भी कुफ्र का फतवा न देना चाहिए उसे मुसलमान ही कहो। मगर अब क्या हो गया। क्या मैं इस से भी गया गुज़रा हो गया? क्या मैं और मेरी जमाअत अशहदो अन ला इलाहा इल्लल्लाह व अशहदो अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू वरसूलुहू नहीं पढ़ती? क्या मैं नमाज़ें नहीं पढ़ता? या मेरे मुरीद नहीं पढ़ते? क्या हम रमज़ान के रोज़े नहीं रखते? और क्या हम इन सभी आस्थाओं के पाबन्द नहीं जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस्लाम के रूप में हिदायत की हैं?

मैं सच कहता हूँ और ख़ुदा तआला की कसम खाकर कहता हूँ कि मैं और मेरी जमाअत मुसलमान है और वह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और कुरआन में इसी तरह ईमान लाती है जिस पर एक सच्चे मुसलमान को लाना चाहिए। मैं एक कण भी इस्लाम से बाहर कदम रखना मौत का कारण विश्वास करता हूँ और मेरा यही धर्म है कि जितने फैज़ और बरकतें कोई व्यक्ति प्राप्त कर सकता है और जितना अल्लाह तआला की निकटता पा सकता है वह केवल आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्ची तथा पूर्ण मुहब्बत से पा सकता है अन्यथा नहीं। आपके सिवा अब कोई रास्ता नेकी का नहीं। हाँ यह भी सच है कि मैं हरगिज़ विश्वास नहीं करता कि मसीह अलैहिस्सलाम इसी शरीर के साथ जीवित आसमान पर गए हों और अब तक जीवित हों। इसलिए कि इस मस्ला को मानकर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सख्त अपमान और बेइज़्ज़ती होती है। मैं एक क्षण के लिए इस अपमान को सहन नहीं कर सकता। सबको मालूम है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने 63 साल की उम्र में वफात पाई और मदीना तय्यबा में आप का मकबरा मौजूद है। हर साल वहाँ हजारों लाखों हाजी भी जाते हैं। अब अगर मसीह अलैहिस्सलाम के बारे में मौत सुनिश्चित करना या मौत को उनकी ओर संबन्धित करना बेअदबी है तो मैं कहता हूँ कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में यह गुस्ताख़ी और बेअदबी क्यों यकीन कर ली जाती है? मगर तुम बड़ी ख़ुशी से कह देते हो कि आप ने वफात पाई। मौलूद करने वाले बड़ी अच्छी आवाज़ों से मृत्यु की घटनाओं का उल्लेख करते हैं। और काफिरों के विरुद्ध भी तुम ख़ुले हृदय से स्वीकार कर लेते हो कि आप ने वफात पई। फिर मैं नहीं समझता कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की वफात पर क्या पत्थर पड़ता है कि नीली पीली आँखें कर लेते हो। हमें भी दु:ख नहीं होता कि तुम आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में भी वफात का शब्द सुन कर ऐसे आंसू बहाते। मगर अफसोस तो यह है कि ख़ातमन्नबिय्यीन और सरवर आलम के बारे में तो तुम बड़ी ख़ुशी से मौत स्वीकार कर लो और उस व्यक्ति की तुलना में जो अपने आप को आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जूती का तस्मा खोलने के भी योग्य नहीं बताता जीवित विश्वास करते हो और उसके बारे में मौत का शब्द मुंह से निकाला और तुम्हें प्रकोप आ जाता है। अगर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अब तक जीवित रहते तो हर्ज नहीं था। इसलिए कि आप वह भव्य हिदायत लाए थे जिसका उदाहरण दुनिया में पाई नहीं जाती। और आप ने वह व्यावहारिक स्थितियाँ दिखाएँ कि आदम से लेकर तब तक कोई उनका नमूना और उदाहरण पेश नहीं कर सकता। मैं तुम से सच सच कहता हूं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अस्तित्व की ज़रूरत दुनिया और मुसलमानों को थी इतनी ज़रूरत मसीह के अस्तित्व की नहीं थी।

(लेक्चर लुधियाना, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 20, पृष्ठ 258)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सम्पादकीय

क्या एक साथ तीन तलाकें देना उचित है?

आजकल हमारे देश भारत में तीन तलाक की चर्चा अपने चरम पर है और यह सवाल उठाया जा रहा है कि अगर कोई मुसलमान पुरुष अपनी पत्नी को एक ही समय में तलाक तलाक तलाक कह दे तो क्या ऐसी तलाक मानी जाएगी? अर्थात इस के बाद पति पत्नी को एक साथ रहने का अधिकार नहीं होगा।

इससे पहले कि जमाअत अहमदिया मुस्लिमा भारत के विचार इस बारे में वर्णन किए जाऐं। यह वर्णन करना अत्यंत आवश्यक है कि जमाअत की शिक्षा के अनुसार इस्लाम की बुनियाद पवित्र कुरआन, सुन्नत और हदीस मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर है, जो कुरआन मजीद के अनुसार हों। हर मस्ला इन्हीं तीन सिद्धांतों के आधार पर हल किया जाना चाहिए। तलाक के बारे में इस्लाम धर्म के संस्थापक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का कथन है। "अबगज़ुल हलाल इनदल्लाह अत्तलाक" अर्थात हलाल चीज़ों में सब से अधिक अवांछित चीज़ अल्लाह तआला के निकट तलाक है। हम दैनिक देखते हैं कि अगर डायबिटीज़ के रोगी के पैर में गैगरीन हो और डॉक्टर उसे सलाह दे कि पैर काटना आवश्यक है, नहीं तो सारा शरीर प्रभावित हो जाएगा इस पर वह रोगी विवश होकर टांग कटवाता है। इसी तरह मर्द औरत का वैवाहिक जीवन भी शरीर की तरह है जब दोनों में से कोई ऐसी स्थिति तक पहुँच जाता है कि जुदाई आवश्यक हो जाए, दोनों का परस्पर जीना कठिन हो जाए तो ऐसी स्थिति में इस्लाम ने तलाक अर्थात जुदाई की अनुमति दी है।

इस्लामी शरीयत पुरुष को "तलाक" और महिला को "खुलअ" लेने का अधिकार देती है और हुक़ूक़ के संबंध में अल्लाह तआला का फरमान है अर्थात महिलाओं को संविधान के अनुसार पुरुषों पर उतना ही अधिकार है जितना मर्दों का उन पर (अलबक़रा: 229)। महिलाओं को भी वैसा ही अधिकार है जैसा कि पुरुषों को। उन दोनों में कोई अंतर नहीं। अल्लाह तआला ने जिस तरह पुरुषों और महिलाओं को बराबर आदेश दिए हैं उसी तरह इनाम भी समान ही हैं।

इन दो बातों के विवरण के बाद जमाअत अहमदिया मुस्लिमा भारत कुरआन सुन्नत और हदीस की रोशनी में यह विश्वास रखती है कि एक साथ तीन बार तलाक तलाक तलाक कहना एक ही तलाक गिनती होगी और तलाक देने वाला पुरुष होश में हो, क्रोध से खाली होकर दो गवाहों की उपस्थिति में तलाक दे तभी वह तलाक मानी जाएगी। और इस की दलील यह है कि अल्लाह तआला कुरआन मजीद में फरमाता है अर्थात ऐसी तलाक जिसमें वापस लौटा जा सके दो बार है फिर या तो पर्याप्त रूप से रोक लेना है या सम्मान के साथ विदा कर देना है। (अलबक़रा: 230) कुरआन की इस आयत से स्पष्ट है कि तलाकें अलग अलग देनी होंगी। एक साथ तलाक देना कुरआन के आदेश का स्पष्ट उल्लंघन होगा। इसी तरह हदीसों में आता है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि के मुबारक समय में एक सहाबी रकाना ने एक सभा में अपनी पत्नी को तीन तलाकें दीं बाद में वह अपने इस काम पर पछताया और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इस बारे में पूछा कहा तो आप ने जवाब में फरमाया ये तीन तलाकें एक ही गिनी जाऐंगी। (मुस्लिम किताबुत्तलाक)

जमाअत अहमदिया मुस्लिमा भारत के निकट कुरआन के आदेशों के अनुसार एक साथ तीन तलाक देना उचित नहीं यह एक ही गिनी जाएगी। यह बात भी प्रामाणिक रिवायतों में साबित है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ि की ख़िलाफत और हज़रत उमर रज़ि के खिलाफत के प्रारंभिक समय में एक ही बैठक में दी गई तीन तलाकें एक ही समझी जाती थीं लेकिन हज़रत उमर रज़ि ने जब यह देखा कि शरीयत की दी गई एक सुविधा का कुछ मूर्ख मज़ाक बना रहे हैं तो यह आदेश दिया कि एक बार में तीन तलाकें तीन ही स्वीकार होंगी। मगर हज़रत उमर रज़ि का यह आदेश सज़ा का रंग रखता है जो उस समय के लिए था और यह चिरस्थायी आज्ञा करार नहीं दिया जा सकता। जमाअत अहमदिया मुस्लिमा भारत इसे शरई हैसियत नहीं देती। कि एक ही बार में कोई व्यक्ति तीन तलाकें दे और बाद में पछताए तो उस के लौटने का अधिकार स्वीकार न किया जाए।

इन दिनों एक और विषय "हलाला" से संबंधित भी चर्चा में लाया जा रहा है हमारे आका हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अल्लाह तआला हलाला करने वाले और जिसके लिए हलाला करवाया जाए उस पर भी लानत डालता है। (तिर्मिज़ी) अत: हलाला की इस्लाम में कोई जगह नहीं। इस्लामी कानून यही है कि तलाक के बाद अगर औरत चाहे तो किसी और से शादी करे और अपनी ज़िन्दगी उसके घर में गुज़ारे और अगर किसी वजह से वह तलाक दे दे या मर जाए तो महिला और पहला पति आपसी सहमति से फिर शादी कर सकते हैं। यह अनुमति है आदेश और मजबूरी नहीं है। आज कल तलाक के बाद कुछ तथा कथित मौलवी जो औरत को कहते हैं कि किसी से हलाला करवाए इस इस्लामी शरीयत का स्पष्ट उल्लंघन और बहुत बुरे गुनाह के दोषी होते हैं

एक और मस्ला जो बड़े ज़ोर शोर से मीडिया में उठाया जा रहा है कि तलाकशुदा औरत की तलाक के बाद गुज़ारे की क्या स्थिति होगी? इस सम्बन्ध में अल्लाह तआला कुरआन मजीद में फरमाता है कि तलाकशुदा को सम्मान के साथ विदा किया जाए। (अलबक़रा: 230) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि के मुबारक ज़माना में कुछ साहाबा ने अपनी पत्नियों को अपरिहार्य स्थिति में तलाक दी तो उन्हें दस दस हजार रुपए के बराबर रकमें बतौर उपकार दीं।

जमाअत अहमदिया मुस्लिमा भारत चूंकि ख़िलाफत प्रणाली के अधीन ऐसे मामले तय करती है और जमाअत में ऐसी तलाकशुदा जो अपने खर्च ख़ुद सहन नहीं कर सकतीं जमाअत के बैतुल माल और वसीयत प्रणाली से उनके गुज़ारे की राशि निर्धारित की जाती है। दुर्भाग्य से 72 समुदायों में बंटे मुसलमान ख़िलाफत की बरकत से वंचित हैं और इसलिए मुसलमान महिलाओं की बुरी किस्मत का विकराल रूप दुनिया के सामने है।

एक और विषय जो बार बार मीडिया उठा रहा है कि मुसलमानों को एक से अधिक शादियों से रोका जाए इस संबंध में जमाअत अहमदिया मुस्लिमा भारत का विचार यह है कि कुछ वैवाहिक और पारिवारिक और सामाजिक परिस्थितियों की मजबूरी के कारण अल्लाह तआला ने एक मुस्लिम पुरुष को एक से अधिक शादी की अनुमति इस शर्त पर दी है कि वह उनसे न्याय और बराबरी का मामला करेगा। यह भी स्पष्ट है कि यह केवल अनुमति है आदेश नहीं। अफसोस मुसलमानों का ग़लत व्यवहार इस्लाम को बदनाम करने का कारण बन रहा है।

जमाअत अहमदिया मुस्लिमा भारत सरकार और न्यायपालिका से विनम्र निवेदन करती है कि कुरआन और इस्लामी शरीयत के बुनियादी नियमों में न तो कोई कमी है और न कोई त्रुटि है मूल कमी और त्रुटि उन आदेशों पर अनुकरण करने और करवाने वालों के विचार और उनकी नीयत में है। आजकल के तथाकथित मौलवी कुरआन की शिक्षाओं को ग़लत रंग में दुनिया के सामने पेश कर के इस्लाम को बदनाम कर रहे हैं। उनके ख़िलाफ आवश्यक कार्रवाई होनी चाहिए।

(शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

ख़ुत्बः जुमअः

आज बांग्लादेश का जलसा सालाना शुरू हो रहा है। अल्लाह तआला की कृपा से बांग्लादेश की जमाअत भी बड़ी श्रद्धा वाली जमाअत है यह भी वह देश है जिस में वहाँ के अहमदियों ने जान की कुर्बानी दी है। इसी तरह सिएरालियोन में भी आज जलसा सालाना शुरू हुआ है।

हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि जिस उद्देश्य के लिए यह जलसे आयोजित किए जाते हैं इस उद्देश्य की भावना को हम समझने वाले हों और फिर पाने वाले हों चाहे वे दुनिया के किसी देश में है।

दुनिया के हर अहमदी को हर बार यह लक्ष्य अपने सामने रखना चाहिए क्योंकि यह केवल तीन दिन का लक्ष्य नहीं है बल्कि एक अहमदी मुसलमान के सारे जीवन का उद्देश्य है।

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों के सन्दर्भ से जलसा सालाना के उद्देश्य का वर्णन और इस बारे में नसीहतें।

आज जबकि इस्लाम को हर जगह बदनाम किया जा रहा है ख़ुद मुस्लिम देशों में मुसलमान मुसलमान के ख़ून का प्यासा है और मुसलमान के कर्म इस्लाम की शिक्षा से दूर जा चुके हैं ऐसे में हम अहमदियों ने ही दुनिया को इस्लाम की सुंदर शिक्षा से परिचित करना है और इसके लिए सबसे ज़रूरी बात अल्लाह तआला से संबंध बनाना है। अल्लाह तआला के समक्ष झुककर दुआएं करनी हैं। अपने कार्यों में बरकत के लिए अल्लाह तआला से ही मांगना है और फिर अपने व्यावहारिक नमूने उत्तम चरित्र के भी स्थापित करने हैं ताकि दुनिया को दिखाई दे कि अगर इस्लाम की शिक्षा के अनुसार इबादतों की उच्च गुणवत्ता देखनी है तो अहमदियों को देखो। अगर इस्लाम की शिक्षा के अनुसार बन्दों के अधिकार को अदा करना और उत्तम चरित्र की उच्च गुणवत्ता देखनी है तो अहमदियों को देखो।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 3 फरवरी 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْـهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْـدَهٗ لَا شَـرِيكَ لَهٗ وَأَشْـهَدُ أَنَّ مُحَمَّـدًا عَبْـدُهٗ وَ رَسُـوْلُهٗ. أَمَّـا بَعْـدُ فَأَعُـوْذُ بِـاللّٰهِ مِـنَ الشَّـيْطٰنِ الرَّجِيْـمِ. بِسْـمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰـنِ الرَّحِيْـمِ - اَلْحَمْـدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِـيْنَ. اَلرَّحْمٰـنِ الرَّحِيْـمِ - مٰلِـكِ يَـوْمِ الدِّيْـنِ -اِيَّـا كَ نَعْبُـدُ وَ اِيَّـاكَ نَسْـتَعِيْنُ. اِهْدِنـاَ الصِّـرَاطَ الْمُسْـتَقِيْمَ-صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْـهِمْ - غَيْرِالْمَغْضُـوْبِ عَلَيْـهِمْ وَلَاالضَّآلِّـيْنَ -

आज बांग्लादेश का जलसा सालाना शुरू हो रहा है। इस बार उनके अंतिम दिन के जलसे से मैंने संबोधित नहीं करना था इसलिए उन्होंने यह इच्छा जताई कि ख़ुत्बा में ही इस संदर्भ में कुछ बात कर दें। अल्लाह तआला की कृपा से बांग्लादेश की जमाअत भी बड़ी श्रद्धा वाली जमाअत है यह भी वह देश है जिस में वहाँ के अहमदियों ने जान की कुर्बानी दी है बारह तेरह के लगभग शहीद हुए। सख़्तियां भी सहन कीं और कर रहे हैं लेकिन अहमदियत और सच्चे इस्लाम पर ईमान और विश्वास में अल्लाह तआला की कृपा से बड़े मज़बूत हैं। अल्लाह तआला उन के ईमान और विश्वास में हमेशा वृद्धि करता चला जाए।

इसी तरह सिएरालियोन में भी आज जलसा सालाना शुरू हुआ है और वहां भी उन्हें कुछ मौसम की वजह से परेशानी थी और कुछ सुरक्षा की चिंताएं थी। उन्होंने यह भी दुआ के लिए कहा और जलसा के हर लिहाज़ से बरकतों वाला होने के लिए कहा। अल्लाह तआला उसे भी बरकतों वाला बनाए।

हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि जिस उद्देश्य के लिए यह जलसे आयोजित किए जाते हैं इस उद्देश्य की भावना को हम समझने वाले हों और फिर पाने वाले हों चाहे वे दुनिया के किसी देश में, बांग्लादेश में या सिएरा लियोन में या अफ्रीका में या कहीं और हों और वे उद्देश्य क्या है वह लक्ष्य वह है जिसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अलग अलग समय में जलसे के बारे में उल्लेख किया। मुझे उम्मीद है कि जलसा के उद्घाटन के अवसर पर बांग्लादेश वाले भी सिएरा लियोन वाले भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उद्धरणों को सुन चुके हैं। दुनिया के हर अहमदी को हर बार यह लक्ष्य अपने सामने रखना चाहिए क्योंकि यह केवल तीन दिन का लक्ष्य नहीं है बल्कि एक अहमदी मुसलमान के सारे जीवन का उद्देश्य है। इसलिए इन लक्ष्यों को हमें हर समय अपने सामने रखना चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि जलसा का उद्देश्य एक है कि पवित्रता और तक़्वा पैदा हो। अब यह कोई अस्थायी चीज़ नहीं है स्थायी रखने वाली बात है।

फिर जलसा में आना तुम्हारे अंदर अल्लाह तआला के भय का वास्तविक एहसास दिलाने वाला हो। यह भी एक स्थायी चीज़ है अर्थात ऐसा भय जो केवल भयभीत होकर डरने वाला डर नहीं है बल्कि अपने प्रिय की नाराज़गी का डर हो।

फिर इस जलसा में आना और आध्यात्मिक माहौल से एक दूसरे के लिए दिल में नरमी पैदा करने वाला हो। अल्लाह तआला के प्यार को पाने के लिए एक दूसरे से मुहब्बत में बढ़ने वाला हो। आपस में ऐसा भाईचारा पैदा हो जाए जिस पर दुनिया ईर्ष्या करे कि ऐसे नमूने ही वास्तविक इस्लामी शिक्षा की अभिव्यक्ति हैं।

आप अलैहिस्सलाम ने इस बात की ज़रूरत का भी एहसास दिलाया कि आप के मानने वाले नम्रता और विनय दिखाने वाले हों। अहंकार और अभिमान को अपने अंदर से पूरी तरह निकाल दें।(उद्धरित शहादतुल कुरआन जिल्द 6 पृष्ठ 394-398) अपनी रूहानी तरक्की की गुणवत्ता हासिल करके फिर वे जहां जहां के रहने वाले अहमदी हैं, इस्लाम की वास्तविक सुंदर शिक्षा को अपने देशवासियों में फैलाऐं। विरोध अगर है तो यह हमारे काम ख़त्म नहीं कर सकता। हिक्मत (ज्ञान) से तब्लीग़ का काम हम ने हर जगह जारी रखना है और यही हमारा उद्देश्य है।

आज जबकि इस्लाम को हर जगह बदनाम किया जा रहा है ख़ुद मुस्लिम देशों में मुसलमान मुसलमान के ख़ून का प्यासा है और मुसलमान के कर्म इस्लाम की शिक्षा से दूर जा चुके हैं ऐसे में हम अहमदियों ने ही दुनिया को इस्लाम की सुंदर शिक्षा से परिचित करना है और इसके लिए सबसे ज़रूरी बात अल्लाह तआला से संबंध बनाना है। अल्लाह तआला के समक्ष झुककर दुआएं करनी हैं। अपने कार्यों में बरकत के लिए अल्लाह तआला से ही मांगना है और फिर अपने व्यावहारिक नमूने उत्तम चरित्र के भी स्थापित करने हैं ताकि दुनिया को दिखाई दे कि अगर इस्लाम की शिक्षा के अनुसार इबादतों की उच्च गुणवत्ता देखनी है तो अहमदियों को देखो। अगर इस्लाम की शिक्षा के अनुसार बन्दों के अधिकार को अदा करना और उत्तम चरित्र की उच्च गुणवत्ता देखनी है तो अहमदियों को देखो।

इसलिए यह जलसा कोई तीन दिन के लिए अहमदियों को इकट्ठा करके धर्म की बातें बताने के लिए नहीं। यह सिर्फ इस लिए आयोजित नहीं होता बल्कि इसलिए आयोजित किया जाता है कि इस माहौल में रहकर अर्थात इन तीन दिनों में जो माहौल बनता है में रहकर अपने दिलों के ज़ंग उतारें। आस्था के मामले में बेशक यहां के रहने वाले अहमदी बहुत मजबूत हैं और जैसा कि मैंने उल्लेख किया इसके लिए बांग्लादेश के अहमदियों ने जानें भी कुर्बान कीं लेकिन अल्लाह तआला हम में से प्रत्येक से यह चाहता है कि इस्लाम के इस पुनर्जागरण के ज़माने में अपने व्यावहारिक रूपों को भी उच्च मानकों को लेकर जाएं। नमाज़ों की पाबन्दी अल्लाह तआला के बताए हुए तरीके के अनुसार करें अपनी नमाज़ों के अंदर नमाज़ों की

भावना कायम करने की कोशिश करो इस बारे में पिछले दो ख़ुत्बे में बहुत विस्तार से बयान कर चुका हूँ। बन्दों के अधिकार अपनी सारी क्षमताओं के साथ अदा करें।

जैसा कि उल्लेख हुआ जलसों के उद्देश्यों में एक उद्देश्य पवित्रता और तक़्वा पैदा करना है। तक्वा के बारे में वर्णन करते हुए एक जगह हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"तक्वा के अर्थ हैं कि बुराई के बारीक तरीकों से बचना। परन्तु याद रखो नेकी इतनी ही नहीं कि एक व्यक्ति कहे कि मैं अच्छा हूँ क्योंकि मैंने किसी का माल नहीं लिया।"(किसी को लूटा नहीं, छीना नहीं। किसी के अधिकार नहीं छीने।) "सेंध नहीं की चोरी नहीं करता। बुरी नज़र नहीं डालता और व्यभिचार नहीं करता। ऐसी नेकी नेक व्यक्ति के निकट हँसी के योग्य है।" (यह कोई नेकी नहीं है यह तो मज़ाक है) "क्योंकि अगर वे इन बुराइयों को करे और चोरी या डाका डाले तो वह सजा पाएगा। अत: यह कोई नेकी नहीं है जो कि आरिफ की निगाह में सम्मान योग्य हो बल्कि वास्तविक और सच्ची नेकी यह है कि मानव जाति की सेवा करे और अल्लाह तआला की राह में सही ईमानदारी और सच्चाई दिखलाए और उसके रास्ते में जान तक दे देने को तैयार हो। इसीलिए यहां कहा है कि

اِنَّ اللّٰہَ مَعَ الَّذِیۡنَ اتَّقَوۡا وَّ الَّذِیۡنَ ہُمۡ مُّحۡسِنُوۡنَ

(सूरह: अन्नहल :129)

अर्थात अल्लाह तआला उनके साथ है जो बुराई से परहेज़ करते हैं और साथ ही नेकियाँ भी करते हैं।" फरमाया "ये ख़ूब याद रखो कि केवल बुराई से बचना कोई ख़ूबी की बात नहीं जब तक उसके साथ नेकियाँ न करे। कई लोग ऐसे रहे होंगे जिन्होंने कभी व्यभिचार नहीं किया। खून नहीं किया। चोरी नहीं की। डाका नहीं मारा और बावजूद इसके अल्लाह तआला की राह में कोई ईमानदारी व सच्चाई का नमूना उन्होंने नहीं दिखाया।" (यह अपराध तो नहीं किया लेकिन अल्लाह तआला की राह में कोई सच्चाई का ऐसा नमूना नहीं दिखाया जो सराहनीय हो) "या मानव जाति की कोई सेवा नहीं की और इस तरह से कोई नेकी नहीं की। इसलिए अज्ञानी होगा वह व्यक्ति जो इन बातों को पेश करके उसे नेकी करने वालों में प्रवेश करे, क्योंकि यह तो बुराइयां हैं। केवल इतने विचार से आदमी औलिया उल्लाह में प्रवेश नहीं हो जाता।" फरमाया "लुच्चापन करने वाले, चोरी या विश्वासघात करने वाले, रिश्वत लेने वाले के लिए अल्लाह तआला की आदत में से है कि उसे यहाँ सज़ा दी जाती है। (वह तो इस दुनिया में सज़ा पा लेते हैं) "वह नहीं मरता जब तक सज़ा नहीं पा लेता।" (आमतौर पर किसी न किसी माध्यम से सज़ा मिल जाती है।) "याद रखें कि केवल इतनी ही बात का नाम नेकी नहीं है।"

फरमाया कि "तक्वा कम स्तर है इसका उदाहरण तो ऐसे ही है जैसे किसी बर्तन को अच्छी तरह से साफ किया जाए ताकि इसमें उन्नत स्तर का अच्छा खाना डाला जाए। अब अगर किसी बर्तन को ख़ूब साफ कर के रखा जाए लेकिन इसमें खाना न डाला जाए तो क्या इससे पेट भर सकता है।? कदापि नहीं। वह खाली बर्तन खाने से तृप्त कर देगा? (अर्थात खाली बर्तन सामने रख दो तो तुम्हारा पेट इससे बिना भोजन के भर जाएगा।) "हरगिज़ नहीं। इसी तरह से तक्वा को समझो।" आपने फ़रमाया "तक्वा क्या है" फरमाते हैं कि "तक्वा तो केवल नफ्स आम्मारह के बर्तन को साफ करने का नाम है।" (नफ्स अम्मारह वह है जो मनुष्य को हर समय बुराइयों पर प्रेरित करता रहता है और बुराईयां करके कोई शर्मिंदगी नहीं होती। इसलिए तक्वा यह है कि नफस अम्मारह का जो बर्तन है इसे साफ करो और जब यह साफ हो गया बुराइयों से आदमी बचने लग गया तो यह तक्वा की प्रारंभिक बात है। फिर इस बर्तन में खाना डालो और वह खाना वह नेकियाँ हैं जो अल्लाह तआला ने बताईं जिसमें अल्लाह तआला के अधिकार भी हैं और बन्दों के अधिकार भी हैं। फरमाया कि "नेकी वह खाना है कि इसमें पड़ता है और जिस ने अंगों को ताकत देकर आदमी को इस योग्य बनाना है कि इससे नेक कर्म हों।" अब इस तरह कोशिश करे। जितनी मानव शक्तियां हैं अल्लाह तआला ने जितनी शक्तियां दी हुई हैं उन्हें इसलिए मज़बूत करे कि इससे अल्लाह तआला के हक़ अदा हों और उसके बन्दों के हक़ अदा हों। उस से नेक कर्म हों और "वे अल्लाह तआला के निकट उच्च स्तर प्राप्त कर सके।" (मल्फ़ूज़ात जिल्द 6 पृष्ठ 214-243 प्रकाशन 1985 ई यू. के)जब ये दोनों बातें होंगी। नेकियाँ इससे पड़ने लग जाएंगे तो फिर तक्वा की गुणवत्ता भी बढ़ेगी और फिर अल्लाह तआला की निकटता भी प्राप्त होगी।

फिर एक वास्तविक मुसलमान के लिए इबादत बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस बारे में कि दुआ क्या चीज़ है, इबादत क्या चीज़ है, इबादत और दुआ क्या चमत्कार दिखाती है और दुआ कैसे करनी चाहिए और कैसी होनी चाहिए और दुआ की वास्तविकता जानने के लिए क्या तरीके अपनाने चाहिए और फिर इस माध्यम से अल्लाह तआला की निकटता कैसे प्राप्त करनी है और इस में नामज़ की क्या भूमिका है? इस बात का वर्णन कहते हुए एक जगह हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"नमाज़ वह अकसीर है जो एक मिट्टी को कीमिया (सोना) कर देती है।" एक मिट्टी लो वह दुआ से सोना बन जाती है। दुआ में ऐसा प्रभाव होना चाहिए "और वह एक पानी है जो आंतरिक गंदगियों को धो देता है" लेकिन कैसी दुआ फरमाया कि "इस दुआ के साथ रूह पिघलती है" ऐसी दुआ जो दिल से निकल रही हो और उसके साथ रूह पिघल रही हो। "और पानी की तरह अल्लाह तआला के आस्ताना पर गिरती है।" अल्लाह तआला के सामने पेश होती है। "वह ख़ुदा के सम्मुख खड़ी भी होती है और रुकूअ भी करती है और सिजदा भी करती है और उसी के प्रतिरूप वह नमाज़ है जो इस्लाम ने सिखाई है" (अर्थात दुआ दिल से जब निकलती है वह कभी व्याकुलता में खड़ी होती है। कभी रुकूअ में जाती है। कभी सिजदा करती है। रूह की विभिन्न स्थितियाँ हैं और उनकी बाहरी हालत जो है उस की नमाज़ में अभिव्यक्ति होती है जो इस्लाम ने सिखलाई है) "और रूह का खड़ा होना यह है कि वह ख़ुदा के लिए प्रत्येक भय को सहन करे और आदेश मानने के बारे में लगातार तत्परता प्रकट करती है और उसका रुकूअ अर्थात झुकना यह है" रूह का झुकना यह है या रुकूअ करना यह है कि "वे सभी मोहब्बतों और सम्बन्धों को छोड़कर ख़ुदा की ओर झुकती है।" ख़ुदा तआला से भी बड़ा कोई सम्बन्ध और मुहब्बत नहीं है "और ख़ुदा के लिए हो जाती है और उसका सिज्दा यह है कि वह ख़ुदा के आस्ताना पर गिर कर अपने विचार को पूर्ण रूप से खो देती है और अपने स्वयं के अस्तित्व को मिटा देती है।" मनुष्य कुछ नहीं रहता सब कुछ अल्लाह तआला के लिए हो जाता है। फरमाया कि "यही नमाज़ है जो ख़ुदा को मिलाती है।" यदि नमाज़ की वास्तविकता पता करनी है कि क्या सच है तो यह नमाज़ है जिस से ख़ुदा मिलता है। लोग कहते हैं नमाज़ें बड़ी पढ़ी हैं अल्लाह तआला नहीं मिला तो यह स्थिति पैदा करने की ज़रूरत है "और शरीयत इस्लाम ने इस की छवि मामूली नमाज़ में खींच कर दिखलाई है ताकि वह शारीरिक नमाज़ आध्यात्मिक नमाज़ की तरफ उत्तेजना पैदा करने वाली हो क्योंकि ख़ुदा तआला ने मनुष्य के अस्तित्व की ऐसी बनावट पैदा की है कि रूह का प्रभाव शरीर और शरीर का प्रभाव रूह पर ज़रूर होता है। जब तुम्हारी रूह दुखी हो तो आंखों से भी आंसू जारी हो जाते हैं और जब रूह में ख़ुशी पैदा हो तो चेहरे पर प्रसन्नता प्रकट हो जाती है यहां तक कि मनुष्य कभी-कभी हंसने लगता है। ऐसा ही जब शरीर को कोई तकलीफ और दर्द पहुंचे तो उस दर्द में रूह भी शामिल होती है और जब शरीर किसी ठंडी हवा से ख़ुशी हो तो रूह भी कुछ भाग लेती है इसलिए शारीरिक इबादत का उद्देश्य यह है कि रूह और शरीर के आपसी संबंधों के कारण रूह में अल्लाह तआला के लिए हरकत पैदा हो।" अल्लाह तआला की तरफ हरकत पैदा हो उस तरफ चले। "और वह आध्यात्मिक कयाम और सजदों में व्यस्त हो जाए" ज़ाहरी क़याम और सजदे और रुकूअ जो हैं उनमें एक ऐसा स्थान हो प्राप्त जाए कि वह आध्यात्मिक बन जाएं। रूह से सजदे हो रहे हों और रूह से रुकूअ हो रहे हों या रूह के रुकूअ हो रहे हों और रूह के सजदे हो रहे हों और वह स्थिति पैदा हो जो मनुष्य को बाहरी तौर पर ख़ुशी और दु:ख में पैदा होता है। मनुष्य रोता भी है हंसता भी है। इसी तरह अल्लाह तआला के साथ संबंध में भी अभिव्यक्ति की जानी चाहिए। "रूहानी क़याम और सजदा में व्यस्त हो जाए क्योंकि मनुष्य उन्नति के लिए मेहनत का मोहताज है।" तरक्की करनी है तो मुजाहद: करना पड़ता है मेहनत करनी पड़ती है "और यह भी एक प्रकार का मुजाहद: है। यह स्पष्ट है कि जब दो बातें परस्पर जुड़ी हुई हों तो जब हम उनमें से एक चीज़ को उठाएंगे तो उसे उठाने से दूसरी चीज़ को भी जो इससे जुड़ी हुई है कुछ हरकत पैदा हो जाएगी लेकिन केवल शारीरिक क़याम और रुकअ और सजदा में कुछ लाभ नहीं है।" अगर केवल ऊपरी तौर पर नमाज़ों में रुकूअ किया सिजदा किया तो इससे कोई फायदा नहीं है। "जब तक कि उसके साथ यह कोशिश शामिल न हो कि रूह भी अपने तौर पर क़याम और रुकूअ और सजदा में से कुछ भाग ले और भाग लेना मअरफत पर निर्भर है और मअरफत फज़ल पर निर्भर करती है।"

(लेक्चर स्यालकोट रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 20 पृष्ठ 223-224)

अत: आप ने एक जगह उसको अधिक स्पष्ट फरमाया किया कि फज़ल जो है यह मिलता तो अल्लाह तआला की कृपा से है इसलिए फज़ल प्राप्त करने के लिए भी अल्लाह तआला के आगे झुको। उसी से मांगो और जब अल्लाह तआला की कृपा से यह अनुभूति प्राप्त हो तो ही वास्तविक नमाज़ भी अदा होती है और इसके

लिए मुजाहद: और मेहनत की ज़रूरत है लगातार प्रयास की आवश्यकता है। जब मुजाहद: होगा तब ही जन्म का उद्देश्य भी प्राप्त होगा। तक्वा और वास्तविक इबादतों की पूर्ति उस समय होगी जैसा कि अभी पहले भी एक उद्धरण में वर्णित किया गया कि दो चीज़ें हैं अल्लाह तआला के अधिकार और बन्दों के अधिकार और यह तक्वा की भी पूर्ति तब होगी और वास्तविक इबादतें भी उस समय होंगी जब बन्दों के अधिकार की अदायगी भी साथ हो। इस बात को वर्णन कहते हुए हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"वास्तविक बात यह है कि सबसे कठिन और नाज़ुक चरण बन्दों के अधिकार का ही है। लोग नमाज़ें पढ़ लेते हैं। मस्जिदों में भी आ जाते हैं। चंदे भी दे देते हैं। कई बार जान की कुरबानी दे देते हैं लेकिन कई बार ऐसे मौके आते हैं कि लोगों का हक़ अदा करना बड़ा मुश्किल हो जाता है। फरमाया कि वास्तविक नाज़ुक मस्ला और चरण बन्दों के अधिकार हैं "क्योंकि हर समय उसका मामला पड़ता है। प्रत्येक क्षण यह परीक्षा सामने रहती है। इसलिए इस स्तर पर बहुत सावधानी से कदम उठाना चाहिए।" फरमाया कि "मेरा तो यह धर्म है कि दुश्मन के साथ भी अत्यधिक सख़्ती न हो। कुछ लोग चाहते हैं कि जहां तक हो सके उस के नष्ट करने और बर्बादी के लिए कोशिश की जाए" चेष्टा की जाए कि दुश्मन को नष्ट कर दें। फिर "वह चिंता में पड़ कर वैध और अवैध मामलों की भी परवाह नहीं करते उसे बदनाम करने के लिए झूठे आरोप उस पर लगाते, झूठ बोलते और उसकी चुगली करते और दूसरों को उसके ख़िलाफ उकसाते हैं। अब बताओ कि मामूली दुश्मनी से कितनी बुराइयों का और बदियों का वारिस बना और फिर यह बदियाँ जब अपने बच्चे देंगी" तो एक के बाद दूसरी बुराई आती है जिस तरह बच्चे दिए जाते हैं एक बुराई दूसरा बच्चा पैदा कर देती है। जब अपने बच्चे देंगी तो "कहाँ तक नौबत पहुंचेगी।"

फरमाया कि "मैं सच कहता हूँ कि तुम किसी को अपना निजी दुश्मन न समझो और वैर की आदत बिल्कुल छोड़ दो अगर ख़ुदा तआला तुम्हारे साथ है और तुम ख़ुदा तआला के हो जाओ तो वह दुश्मन भी तुम्हारे सेवकों में दाख़िल कर सकता है लेकिन अगर तुम ख़ुदा से सम्बन्ध विच्छेद किए बैठे हो और साथ ही कोई रिश्ता दोस्ती का बाकी नहीं। इस का उल्लंघन तुम्हारा चाल चलन है। उसके इच्छा के विरुद्ध तुम्हारा चाल चलन है फिर ख़ुदा से बढ़कर तुम्हारा दुश्मन कौन होगा। प्राणियों की दुश्मनी से मनुष्य बच सकता है लेकिन जब ख़ुदा दुश्मन हो तो अगर सारी सृष्टि दोस्त हो तो कुछ नहीं हो सकता। इसलिए तुम्हारा तरीका अंबिया अलैहिमुस्सलाम के जैसा तरीका हो। ख़ुदा तआला की यही इच्छा है कि व्यक्तिगत शत्रुता कोई न हों" कोई निजी दुश्मनी नहीं है।

फरमाया "ख़ूब याद रखो कि मनुष्य को सौभाग्य और सआदत तब मिलती है जब वह व्यक्तिगत रूप से किसी का दुश्मन नहीं है। हां अल्लाह तआला और उसके रसूल की इज्ज़त के लिए अलग बात है।" अल्लाह तआला और रसूल के सम्मान का सवाल पैदा होता है तो वहां दुश्मनी पैदा हो जाती है "अर्थात जो अल्लाह तआला और उसके रसूल की इज्ज़त नहीं करता बल्कि उन का दुश्मन है, उसे तुम अपना दुश्मन समझो। इस दुश्मन समझने के यह अर्थ नहीं हैं" यहाँ भी स्पष्ट किया है कि दुश्मन तो लो समझो लेकिन यह अर्थ नहीं "कि तुम उस पर झूठ बोलो और बेवजह उसे दु:ख देने की परियोजना करो। नहीं, बल्कि उससे अलग हो जाओ।" दुश्मन है उससे अलग हो जाओ" और मामला ख़ुदा तआला को सौंप दो। संभव हो तो सुधार के लिए दुआ करो। संभव हो तो दुश्मन के सुधार के लिए दुआ करो। "अपनी तरफ से कोई नई भाजी उस के साथ शुरू न करो "अर्थात उसके साथ कोई नया विवाद शुरू न कर दो।"

फरमाया कि "यह बातें हैं जो आत्म शुद्धि से संबंधित हैं।" हज़रत अली की घटना बयान फरमाते हुए फरमाते हैं कि "हज़रत अली करम अल्लाह तआला एक दुश्मन से लड़ रहे थे और केवल ख़ुदा तआला के लिए लड़ रहे थे। अंत हज़रत अली रज़ि ने उसे अपने नीचे गिरा लिया और उसकी छाती पर चढ़ बैठे उसने झट हज़रत अली के मुंह पर थूक दिया। आप तुरंत उसकी छाती से उतर आए और उसे छोड़ दिया क्योंकि अब तक तो मैं सिर्फ ख़ुदा तआला के लिए तेरे साथ लड़ रहा था लेकिन अब जबकि तूने मेरे मुंह पर थूक दिया है तो मेरे अपने नफ्स का भी कुछ हिस्सा इसमें शामिल हो गया है। अत: मैं नहीं चाहता कि अपने नफस के लिए तुम्हें कत्ल करूं। इससे साफ पता चलता है कि आप ने अपने नफस के दुश्मन को दुश्मन नहीं समझा।" आप फ़रमाते हैं कि ऐसी प्रकृति और आदत अपने अंदर पैदा करनी चाहिए।" अपने मानने वालों को आप ने फरमाया "अगर स्वाभाविक लालच और स्वार्थों के लिए किसी को दु:ख देते और वैर के क्रम को लम्बा करते हैं तो इससे बढ़कर ख़ुदा तआला को नाराज़ करने वाली क्या बात होगी।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 8 पृष्ठ 104-105 संस्करण 1985 ई प्राकशन यू. के)

इसलिए किसी व्यक्तिगत रंजिश के कारण से किसी को दु:ख नहीं देना और अल्लाह तआला और रसूल के दुश्मन को भी अपना दुश्मन समझो। वहां से उठ जाओ। उसके लिए दुआ करो। उस के सुधार की कोशिश करो और जायज़ तरीके से उस के हमलों का जवाब दो लेकिन यह नहीं कि उसकी हर बात को बुरा समझते हुए पूर्ण रूप से ग़लत तरीके से दुश्मनी पर उतर जाओ। यह भी ग़लत है।

अल्लाह तआला हमें तक्वा की वास्तविक समझ और एहसास प्रदान करे और अपना फज़्ल फरमाते हुए अल्लाह तआला की निकटता हासिल करने वाली हमारी नमाज़ें और इबादतें हों। अल्लाह तआला हमें बन्दों के अधिकार अदा करने की बारीकी को समझने वाला बनाए। हमारा हर कर्म चाहे सांसारिक हो इस इरादे से हो कि हम ने अल्लाह तआला की रज़ा को प्रत्येक अवस्था में प्राप्त करना और प्राथमिकता देना है। अल्लाह तआला हमें इसकी ताकत प्रदान करे।

☆ ☆ ☆

वह अल्लाह वाले थे इसलिए तुरंत समझ गए और कहने लगे हुज़ूर वादा करता हूं कि भविष्य में ऐसा नहीं होगा

हज़रत मिर्ज़ा महमूद अहमद साहिब ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि सूर: मर्यम की आयत 74 की व्याख्या करते हुए बय्यना के बारे में बताते हुए लिखते हैं:

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक बार लुधियाना तशरीफ़ ले गए । हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल के ससुर सूफ़ी अहमद जान साहब एक प्रसिद्ध पीर और बुज़ुर्ग व्यक्ति थे और जिन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तक 'बराहीने अहमदिया' भी पढ़ी हुई थी। उन्होंने जब आपकी तशरीफ़ आवरी की ख़बर सुनी तो बड़े ख़ुश हुए और अपने एक मुरीद से जो क़ाबुल के शहज़ादे थे आपकी दावत करवाई। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उनके मकान पर तशरीफ़ ले गए और जब भोजन समाप्त हुआ तो सूफ़ी साहब आप को मकान तक पहुंचाने के लिए आप के साथ ही चल पड़े। सूफ़ी अहमद जान साहब रत्तर छत्तर वालों के मुरीद थे (रत्तर छत्तर गुरदासपुर क्षेत्र में है) हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने रास्ते में पूछा कि सूफी साहब सुना है कि रत्तर छत्तर वालों की आप ने बारह साल तक सेवा की है क्या आप बता सकते हैं कि आप ने उनकी सगंत से कया लाभ हासिल किया ? उन्होंने कहा हुज़ूर वे बड़े बुज़ुर्ग और बाख़ुदा इंसान थे। मैं बारह साल उनकी सगंत में रहा और बड़ा लाभ प्राप्त किया। फिर उन्होंने एक व्यक्ति की ओर इशारा किया जो उनके पीछे आ रहा था और कहा हज़ूर उनके आशीर्वाद से अब मुझ में इतनी शक्ति पैदा हो चुकी है कि अगर मैं उस व्यक्ति की ओर आंख उठाकर देखूं तो तुरंत ज़मीन पर गिर पड़े और तड़पने लग जाए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम यह सुनते ही खड़े हो गए। थोड़ी देर चुप रहे और फिर इस सोटी को जो आप के हाथ में थी ज़मीन पर रगड़ते हुए आपने कहा कि मियां साहब फिर उसका आप को क्या लाभ पुहुंचा और यदि ऐसा हो जाए तो उस व्यक्ति को क्या लाभ होगा। वह बाद अल्लाह वाले थे इसलिए आप ने अभी इतना ही वाक्य कहा था कि वह तुरंत समझ गए और कहने लगे हुज़ूर वादा करता हूं कि भविष्य में ऐसा नहीं होगा। मैं समझ गया हूं यह एक बे लाभ वस्तु है। इस का धर्म और आध्यात्मिकता से कोई संबंध नहीं। अब स्पष्ट में यह एक आयत तो थी क्योंकि ताकत प्रदर्शित हुई और एक-चलते हुए आदमी गरा लिया परन्तु इस का नेकी के साथ क्या संबंध है। यह तो ऐसा ही बात है जैसी किसी को मुक्का मारकर गिरा लिया जाए । क्योंकि जिस तरह मुक्का मारने से दूसरा गिर जाता है इसी तरह एक सम्मोहन का अभ्यास रखने वाला आदमी दूसरे पर नज़र डालकर उसे गिरा सकता है । अत: इससे इतना तो पता चलता है कि जो नज़र डाली है इसमें बड़ी शक्ति है लेकिन इससे यह साबित नहीं होता कि जिस ने नज़र से दूसरे को गिरा लिया है इस का ख़ुदा तआला से संबंध है इसलिए यह एक आयत तो थी मगर बय्यन: नहीं थी । बय्यन: वह आयत होती है जो अपना उद्देश्य भी वर्णन करती है और बताती है कि इस निशान का उद्देश्य क्या है।" (तफसीर कबीर भाग 5 पृ 342)

☆ ☆ ☆

वक्फ़े नौ किलास

सय्यदना हज़रत खलीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़

14 अक्तूबर 2016 ई को सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने वाकफाते नौ तथा वाकफीन नौ के साथ किलास आयोजित की। इस कक्षा के कुछ प्रमुख सवाल तथा जवाब अख़बार बदर उर्दू 1 दिसम्बर 2016 ई के सहयोग से पाठकों के लिए प्रस्तुत हैं।(सम्पादक)

प्रश्न: प्रिय हुज़ूर मेरा सवाल है कि मुहर्रम का महीना क्या है?

इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया: मुहर्रम का महीना इस्लामी महीनों में से एक महीना है। दस मुहर्रम में इमाम हुसैन को शहीद किया गया। इसलिए जो शिया लोग हैं ख़ुद ही यज़ीद के साथ मिलकर उन्होंने आपका कत्ल किया और खुद ही वह अपने आप को पीटते हैं। हज़रत इमाम हुसैन को कत्ल किया गया थी। उसके बाद एक शिया फिर्का बन गया। कुछ लोग शोक मनाते हैं कि इमाम हुसैन की हत्या की गई है। अपने आप को पीटते हैं। इसलिए दस मुहर्रम उनके लिए बड़े अफसोस का दिन है। इसलिए हम कहते हैं कि अगर इन दिनों में किसी की शादी होनी है, विशेष रूप से हमारे आसपास शिया रहते हैं। इन दिनों हम न समारोह रखें, इसलिए नहीं कि हम उन्हें ठीक समझते हैं केवल उनके सम्मान में। अगर कोई रोशनी की है, तो न करें। जैसे यहाँ तुम ने लाईटिंग की हुई थी तो मैंने रोक दिया था कि शायद निकट कोई शिया हो और उसकी भावनाओं को ठेस न लगे। हालांकि इसका कोई अक्ली सबूत नहीं है। बहरहाल यह अफसोस तो होता है कि क्रूर तरीके पर आं हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नवासे को शहीद किया गया।

एक बच्ची ने सवाल किया कि वाकफ़ात नौ शादी के बाद अपनी ज़िन्दगी कैसे गुज़ारे?

इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया पहले तो यह है कि अपनी अम्मी अब्बा को कहो और खुद भी कोशिश करो कि ऐसे लड़के से शादी करो जो नेक हो, धार्मिक हो, नमाज़ें पढ़ने वाला हो ताकि वक्फ़े नौ के काम को पूरा करने में रोक न डाले। दूसरा यह कि जब शादी हो जाती है तो विभिन्न तबीयतें होती हैं। कई बार ऐडजेसट करना मुश्किल हो जाता है। इसलिए याद रखो कि कोई पूर्ण नहीं होता। प्रत्येक में छोटी छोटी कमियां, दोष, खामियां होती हैं। इसलिए अगर कोई पति कोई पत्नी दूसरे की बुराई देखे तो अपनी आंख बंद कर ले। बोलने की जहां जरूरत पड़े और टिप्पणी करना हो तो भाषा बंद कर लो। यदि कोई तुम्हारे पास आकर एक दूसरे की बुराई सुनाना चाहे तो कान बंद कर लो। अगर अच्छी बात देखो तो मुंह से प्रशंसा करो। अच्छी बात ज़रूर सनो, देखो। बस इन तीन बीमारियों से मुंह फैर लो और तीन अच्छाइयां कर लो तो जीवन आसान हो जाता है।

एक बच्ची ने सवाल किया कि आप की सब से पसंद दुआ क्या है?

इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया हर दुआ विभिन्न समयों में सब से पंसद वाली बन जाती है। सब से अधिक में दरूर शरीफ पढ़ता हूँ और यह भी मुझे पसंद हे "रब्बे इन्नी लेमा अन्ज़लत इलय्या मिन ख़ैरिन फ़क़ीर "

एक युवा वक्फ नौ ने सवाल किया कि एक अहमदी वक्फ नौ बच्चा जमाअत का कैसे उपयोगी अस्तित्व बन सकता है?

इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया वक्फ नौ का मतलब है कि तुम्हारे माता पिता ने तुम्हारे जन्म से पहले तुम्हें वक्फ किया था। जब तुम पैदा हुए तो इससे पहले ही तुम्हारी माँ ने यह दुआ की थी कि जो भी पैदा होने वाला है, उसे मैं धर्म की सेवा के लिए प्रस्तुत करती हूँ। धर्म की सेवा कैसे हो सकती है? धर्म की सेवा तब होती है जब धर्म जानते हो और धर्म क्या है? हम कौन हैं, मुसलमान हैं? एक मुसलमान के लिए धर्म की गाईड लाईन कहाँ से मिलती है। क़ुरआन से मिलती है। पहली बात तो यह है कि वक्फ नौ को यह पता होना चाहिए कि एक ख़ुदा है जो सभी शक्तियों का मालिक है और जिसने हमें आदेश दिया है कि मेरी इबादत करो। तो एक युवा वक्फ़ नौ बच्चों को अपनी नमाज़ों की रक्षा करनी चाहिए। अल्लाह तआला ने फरमाया है कि नमाज़ें पढ़ो। अल्लाह तआला पर ईमान लाओ तो यह नमाज़ें हैं। नमाज़ का हक़ अदा करो। फिर अगर नफिल पढ़ सको तो अधिक इबादतें भी करो। अल्लाह तआला से मदद माँगो कि अल्लाह तआला तुम्हें अपनी मुहब्बत भी प्रदान करे और उसकी आज्ञाओं पर चलने की ताकत दे। अल्लाह तआला की आज्ञाओं पर चलना क्या है? क़ुरआन हमारे लिए मार्ग दर्शक है और इसमें बहुत सारे आदेश हैं। अल्लाह तआला की इबादत के अतिरिक्त तुम्हें एक ऐसी जीवन व्यतीत करना चाहिए कि तम्हें लोगों की सेवा करनी चाहिए। झूठ नहीं बोलना चाहिए। इंसाफ पर स्थापित रहना चाहिए और न्याय ऐसा कि फिर अगर तुम्हें गवाही ही देनी पड़े तो कोई परवाह नहीं करनी।

अगर तम्हें कहा जाए कि तुम्हारा भाई या कोई और करीबी के ख़िलाफ शिकायत है कि उस ने अमुक ग़लत काम किया था तुम भी वहाँ थे तो बताओ कि क्या वास्तव में किया था। तुम उससे डर कर या इसलिए कि वह मेरा रिश्तेदार है, यह कह दो कि मुझे नहीं पता, तो यह गलत है। अगर तुम इस बात को ख़ुद फैलाओ तो यह सही नहीं। लेकिन अगर तुम्हें गवाही के लिए बुलाया जाए तो बताओ कि सच क्या है। बहुत सारे और आदेश हैं जो अल्लाह तआला ने क़ुरआन में दिए हैं। यह सोचो कि वक्फ नौ तो केवल टाइटल तो नहीं है धर्म की सेवा की भावना होनी चाहिए। तुम जो पढ़ाई करते हो अगर जमाअत को ज़रूरत होगी तो तुम्हें जमाअत कहेगी कि ठीक है तुम आ जाओ और नियमित वक्फ में शामिल होकर जमाअत का काम करो और अगर जल्दी नहीं है तो कहेंगे कि फिलहाल तुम अपना काम करो लेकिन इस अवस्था में भी एक वक्फ नौ जो है उसे यह समझना चाहिए कि उसकी सबसे बड़ी प्राथमिकता यही है कि वह धर्म का सेवक बनना है। इसके लिए जहां भी है उसने अपना नमूना स्थापित करना है, जो प्रकार का काम भी कर रहा है, वह अपनी धार्मिक शिक्षा के अनुसार कार्य करना है।

फिर एक वक्फ नौ सेवक ने सवाल किया: ईशा की नमाज़ में अगर तीन रकअत छूट जाएं तो वह तीन रकअत पढ़ने के दो तरीके हैं। एक यह कि पहली रकअत में खड़े होते हैं और दूसरे में बैठते हैं और तीसरे में सलाम करते हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने कहा सवाल भी कर रहे हो और जवाब भी दे रहे हैं। अगर तुम्हारी तीन रकअतें छूट जाएं तो पहली रकअत में तुम खड़े हो। अत: सूरह फातिहा के बाद कोई सूरत पढ़ो और फिर बैठ जाओ। पहली रकअत में ही बैठ जाओ और फिर खड़े होकर दो रकअत पढ़ो और फिर सलाम फेरो।

एक युवक ने सवाल किया कि भविष्य में अहमदी जब प्रधानमंत्री बन जाएंगे तो उस समय ख़िलाफत का राजनीति पर कितना प्रभाव होगा?

इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया विभिन्न जातियां जो धर्म में शामिल होंगी कोई अफ्रीकी होगा, कोई यूरोपीय, कोई एशियन या विभिन्न देशों में होंगे। जहां तक उनके सरकार से मामलों का संबंध है वे अपनी सरकार के काम चलाएंगे। जहां धर्म का मार्गदर्शन लेने की ज़रूरत होगी, वह ख़िलाफत से अपना मार्गदर्शन लेंगे। इसके लिए भी कुरआन ने आदेश दिया हुआ है। अल्लाह तआला को पता था ऐसा होगा। इसलिए अल्लाह तआला ने सरकारों के विषय में भी हमें गाईड लाईन दी कि न्याय से चलाओ। अपनी अमानतों का हक़ अदा करो। अगर कोई एक सरकार दूसरी सरकार पर अत्याचार करती है, एक अहमदी सरकार दूसरी पड़ोसी सरकार पर हमला कर देती है कहती है कि मैंने समय के खलीफा की भी बात नहीं माननी। उस समय बाकी जो मुसलमान सरकारें उसके आसपास हैं, वे इकट्ठी होकर अत्याचार को रोकने की कोशिश करेंगी। फिर अगर वह रुक जाए तो कोई अन्याय नहीं होगा। एक हद तक आध्यात्मिक गाईडलाईन उन्हें ख़िलाफत से मिलेगी। कुछ हद तक इन सरकारों को कुरआन की आज्ञाओं के अधीन ही ख़लीफा की बात माननी होगी और इकट्ठे होकर अत्याचार को रोकना होगा ताकि उस देश को सज़ा मिले जो अत्याचार पर तत्पर है।

एक युवक ने सवाल किया कि गैर अहमदी आपत्ति करते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बराहीने अहमदिया 50 भागों में लिखने का वादा किया था, लेकिन पांच भाग लिखे।

इस पर हज़ूर अनवर ने कहा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जवाब दे दिया है कि जब पहले चार वॉल्यूम लिखी थीं तो उसके बाद अल्लाह तआला ने वह्यी के द्वारा निरन्तर आप को कहना शुरू कर दिया कि आप मसीह मौऊद हैं। फिर आप ने अल्लाह तआला से मार्गदर्शन पाकर समय के अनुसार विभिन्न किताबें लिखनी शुरू कर दीं। इसके बाद फिर यथा समय दूसरों से मुबाहिसे शुरू हो गए। फिर इन मुबाहसों के अनुसार किताबें लिखनी शुरू कर दीं। तरासी चौरासी किताबें लिखें। अरबी में भी लिखीं, उर्दू में भी लिखीं। बराहीने अहमदिया की जो चार किताबें लिखी थीं वह 1881 से लेकर तीन चार वर्षों में लिखें थीं। आपने अधिक लिखने का वादा तब किया था जब आपने दावा नहीं किया था और अल्लाह तआला ने आप को वह स्थान नहीं दिया था। जब मसीह महदी का स्थान अल्लाह तआला ने आप को दे दिया तो अल्लाह तआला ने आपका मार्गदर्शन किया कि अमुक Contemporary

Issue पर लिखें। हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि मुझे लगता है कि मेरे विचार में जो बातें मैंने लिखनी थीं वे उन चार में आ गई हैं। फिर पांचवें जिल्द जो लिखी वह 1905 ई में लिखी। यह भी फरमाया कि जो लेख मैंने वर्णन किए हैं वे इतने भारी हैं एक विषय मेरे विचार में दस संस्करणों के बराबर है। तो इस दृष्टि से हम कह सकते हैं कि लेख के मामले में पांच ही पचास के बराबर हो गए हैं। उद्देश्य यह था कि ईसाई धर्म के ख़िलाफ इस्लाम की प्रतिरक्षा कर रहे हैं। वह आपने सारे लिट्रेचर में किया। जो कहना चाहते था वह कह दिया। पचास क्या इस की जगह पचासी लिख दें। इस्लाम के बचाव में जो लिखा जाना चाहिए था वह अपने लिखा। इससे क्या फर्क पड़ता है कि वह पांच थीं या पचास। सवाल यह है कि सारी लिख दें और उसी में सारा कुछ समोया गिया।

एक युवक ने सवाल किया कि नमाज़ पढ़ते समय कभी कभी ध्यान हट जाता है?

इस पर हुज़ूर अनवर ने कहा अगर तुम्हारा ध्यान कभी कभी हटता है तो तुम बड़े नेक आदमी हो। माशा अल्लाह। इसमें कोई बात नहीं। लेकिन हर बार यह नहीं कि तुम नमाज़ के लिए खड़े हो जाओ और तुम्हें याद आ जाए कि टीवी पर अमुक कार्यक्रम आना है जो मैंने जाकर देखना है और पिछली किस्त कहाँ समाप्त हुई थी। या कंपयूटर पर अमुक काम करना है या कोई व्यर्थ विचार आते हैं। तो यह ठीक नहीं हैं लेकिन अगर कभी कभी विचार आ जाता है तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इसके समाधान का यह तरीका बताया है कि नमाज़ के दौरान जहां कभी तुम्हें ख्याल आता है, फिर तुम्हें विचार आ जाए कि यह मुझे ग़लत विचार आया है, तो तुम पहले आऊज़ु बिल्लाह मिनश्शयत निर्रजीम, पढ़ो। अगर तुम ने नीयत बांधी हुई है और तुम रुकूअ में नहीं गए तो फिर उसी जगह से शुरू करो। बार बार इस दुआ को पढ़ो और अगर रुकूअ में चले गए हो तो ध्यान करो, इस्तिग़फार करके इस विचार से बचने की कोशिश करो। विचार आ जाते हैं लेकिन यही ज़ग है। नमाज़ की स्थापना का आदेश कुरआन में है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक जगह फरमाया है कि नमाज़ की स्थापना का एक यह भी मतलब है कि नमाज़ पढ़ते हुए बार बार विचार आ जाते हैं। तो जब भी विचार आए उन विचारों को छोड़कर नमाज़ की ओर ध्यान दो, यह भी नमाज़ की स्थापना करना है। कोशिश करो, धीरे धीरे जब मनुष्य कोशिश करता है तो आदत पड़ जाती है। फिर विचार नहीं भटकते।

एक युवा वक्फ नौ ने सवाल किया कि जब आप घाना गए थे, तो आप क्या कठिनताएं सम्मुख आई थीं, सुनने में आया है कि वहाँ पानी भी कभी कभी उपलब्ध नहीं होता और वहां पर कितने अहमदी हो गए हैं अब तक?

इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फरमाया, मैं तो वक्फ करके गया था। कठिनाइयां कैसी। मुझे तो कभी महसूस नहीं हुआ कि कुछ कठिन है। मुश्किल तो वह होती है कि जब सामने आए तो इंसान सोचे कि यह मुश्किल है। पानी अगर नहीं था तो मैं अपनी कार पर डरम रखकर ले जाता था और किसी गन्दे तालाब से ड्रम भर कर ले आता था और घर आकर साफ कर लेता था या कई बार वहां काम करने वाले मिल जाते थे, वे ख़ुद ही पानी डाल जाते थे। यह छोटी मोटी बातें, वक्फ सामने आती हैं। इस को मुश्किल नहीं कहते, इसके लिए तैयार हो जाना चाहिए। जब जीवन वक्फ हो तो यह नहीं सोचना चाहिए कि यह मेरे लिए मुश्किल है।

घाना में मेरा अनुमान है कि कोई एक लाख से अधिक होंगे। जब में 1980 ई के दशक में वहाँ था तब जलसों में भी उपस्थिति बहुत नहीं होती थी। आठ दस हज़ार होती थी। लेकिन 1981 में सरकार द्वारा जो जनगणना हुई थी, जिन लोगों ने अपने आप को अहमदी लिखवाया था उन की संख्या भी तीन लाख से अधिक थी। जब उस समय तीन लाख थी तो अब तो बहुत अधिक बैअतें हो गई हैं। बहुत सावधान अनुमान लगा रहा हों। शायद इससे अधिक ही हूँ अब तो हर साल अहमदी होते हैं कुछ बैअतें हुई थीं, आज से पंद्रह सोलह साल पहले, लेकिन क्योंकि वे दूरदराज़ के क्षेत्रों में थीं तो उनसे संपर्क नहीं रहा। कुछ मौलवियों ने उन्हें डरा कर भगा दिया। लेकिन जब मेरी 2003 ई में ख़िलाफत के पद पर आसीन होने के बाद मुरब्बियों से बैठक हुई थी, मैंने उनसे यही कहा था कि अफ्रीका में जो बैअतें हुई हैं, उनसे संपर्क किया, उन्हें वापस लेकर आएं। जो नहीं हैं उन्हें तब्लीग़ कर के बताएं। अब हम छोटे से छोटे गांव में भी बैअतें करवाते हैं। कोशिश है कि वहां मस्जिद बन जाए ताकि उनका संपर्क जमाअत से रहे। कुछ दूरदराज के इलाके हैं जहां जाने का कोई तरीके नहीं है। केवल जंगलों में एक साइकिल का रास्ता बना हुआ है। जिस में एक आदमी जा सकता है। वहाँ कोई गाड़ी नहीं जा सकती। मुझे याद है जब मैं उत्तरी क्षेत्र में था। हमारा स्कूल नहीं था लेकिन कोई अहमदी वहाँ नहीं था। बस अकेला अहमदी था। फिर धीरे धीरे एक लड़का स्कूल में आया। फिर दो तीन अहमदी गए। फिर लोकल मिशनरी को रखा। फिर मेरी पत्नी बच्चे आ गए। जब मैं पहली ईद पढ़ी थी वहाँ हम तीन आदमी थे। लेकिन कैथोलिक चर्च बड़ा सुंदर था। मेरे घर में तो मट्टी के तेल से लैम्प जलता था। बिजली भी नहीं थी। उनके यहां जनरेटर चल रहे होते थे। बाइक यहां तक कि हर चीज़ उन को मुहैया थी। हम ने अगर फिरना होता था तो साइकिल फिरते थे। मैंने देखा था कि पादरी मोटर साइकिल पर दूर दराज़ के इलाके में पहुंच जाते थे। क्योंकि उत्तर में अक्सर मुशरिक लोग रहते हैं। टरीडेशनल कबीला के लोग हैं। हमारी तो पहले यह हालात थे लेकिन अब अल्लाह तआला की कृपा से वहां जमाअत बन चुकी है। उस क्षेत्र में जहां मुशरिक लोग थे वह इस्लाम के बहुत ख़िलाफ थे लेकिन अब उनके बड़े इमाम भी मुसलमान हो गए हैं। अल्लाह तआला की कृपा से मस्जिदें भी बड़ी-बड़ी हैं। एक टमाले शहर था मेरी आवास से सत्तर मील की दूरी पर था वहाँ छोटी मस्जिद होती थी। जिस में मेरे विचार से अधिकतम सौ लोग नमाज़ पढ़ सकते थे। अब वह डबल स्टोरी मस्जिद है। इस मस्जिद के दो हाल हैं जो यहां कि इस मस्जिद के हॉल से बड़े हैं। तो जमाअत तरक्की कर रही है तो बड़ी-बड़ी मस्जिदें बन रही हैं। लोग आते हैं और मस्जिदें भर जाती हैं। कई कई गांव वहां पर बाद में अहमदी हुए हैं। अल्लाह तआला की कृपा से जमाअत बहुत तेजी के साथ बढ़ रही है।

एक वक्फ नौ छात्र ने सवाल किया कि कुछ लोग पढ़ने के बाद और अच्छी नौकरी मिलने के बाद अपने माता पिता की सहायता करते हैं मगर जो जामिया में पढ़ते हैं, वे अपने माता पिता की मदद कैसे करें?

इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया बात यह है कि माता-पिता ने अगर वक्फ इसलिए किया था कि वक्फ नौ ख़िताब मिल जाए, बस यह काफी है। लेकिन अगर वक्फ हज़रत मरियम की मां की तरह किया था कि जो कुछ मेरे पेट में है उसे वक्फ करती हूं, धर्म के लिए देती हूँ। उन्होंने यह उद्देश्य नहीं रखा था कि दुनिया कमाएगा बल्कि धर्म कमाएगा। जो धर्म कमाने वाले होते हैं। अगर वक्फ नौ हो तो यह देखना होगा कि तुम्हें वक्फ करना होगा तो फिर दुनिया को भूल जाओ। फिर यह भूल जाते हैं कि माता पिता की मदद करनी है। माता पिता की मदद दूसरे बच्चे कर लें। अगर किसी के माता पिता इतने ग़रीब हैं या ऐसी हालत में हैं कि कोई बच्चे नहीं कि उन की मदद करें तो वक्फ नौ जमाअत को लिख कर अपने आप को वक्फ से फारिग़ कर लें और फिर दुनिया कमाए। मूल वक्फ नौ वही है जो जमाअत की सेवा कर रहा है और उसे पैसे का कोई लालच नहीं है। उसे इस बात से कोई उद्देश्य नहीं है कि पैसे आते हैं या नहीं आते और वे वही लोग हैं जो वक्फ जीवन करके या मुरब्बी बनकर या मुबल्लिग़ बनकर जामिया में पढ़कर धर्म की सेवा कर रहे हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो एम.एस.सी करके, पी.एच.डी करके वक्फ करते हैं। स्कूल के शिक्षक लगे हुए हैं या कोई और जमाअत का काम कर रहे हैं। कादियान में हमारे कुछ इंजीनियर हैं, रबवा में भी और पढ़े लिखे लोग हैं, डाक्टर हैं, बहुत थोड़े पैसे लेते हैं। पाकिस्तान में कुछ डाक्टर हैं, हो सकता है कि अगर वह बाहर उसकी सेवा कर रहे हों तो दिन के दो तीन लाख रुपये कमाते हैं। जबकि यह डॉक्टर जमाअत का काम कर रहा होता है तो उसे महीने के बाद कुछ हज़ार रुपये मिलते हैं। वक्फ मतलब यह है कि धर्म की सेवा करनी है, दुनिया को नहीं देखना। इसलिए मदद का तो सवाल ही नहीं। हां अगर मदद करनी है ऐसे हालात हैं जमाअत तानाशाह नहीं है, न समय का ख़लीफा कोई अत्याचार करता है, इसलिए व्यक्ति को कहेगा, ठीक है हालात ऐसे हैं तो आप अपने माता-पिता की सेवा करो। वक्फ से तुम फारिग़ हो। वक्फ नौ या वाकफ ज़िन्दगी दुनिया को नहीं देखता बल्कि धर्म को देखता है। अहद करते हो "मैं धर्म को दुनिया में प्राथमिकता दूंगा"तो इसका क्या अर्थ है प्राथमिकता देना क्या होता है? यही कि बस धर्म को देखा जाए और यह न सोचा जाए कि पैसे आते हैं या नहीं। अल्लाह तआला की कृपा से अब तो जमाअत की स्थिति बड़ी अच्छी है। मुबल्लिग़ों और मुरब्बियों को भत्ता मिलता है। महीने का गुज़ारा भी हो जाता है। जो पुराने हमारे मुबल्लिग़ गए थे वे तो इस तरह रहते थे कि कुछ पुराने मुबल्लिग़ों ने मुझे बताया है कि वह रोटी खरीदते थे और एक दो टुकड़े पानी के साथ खा लेती थे क्योंकि सालन नहीं होता था। यही उनका खाना होता था। यह वक्फ है। कैथोलिक पादरियों का मैं ने बताया था कि एक पादरी से मैंने पूछा कि तुम वहाँ जाकर क्या करते हो। वहाँ एक कबीले था जिसकी दस हज़ार आबादी थी और वे अपनी भाषा बोलते हैं। उसने कहा कि हम बाइबल का अनुवाद करना चाहते हैं तो मैं वहाँ जाता हूँ, उन्हीं लोगों में रहता हूँ और जो वह खाते हैं वही खाता हूँ। ज़मीन पर सो जाता हूँ ताकि हम उनकी भाषा सीख कर बाईबल का अनुवाद करें। यह वक्फ जीवन की रूह होनी चाहिए। पैसा कमाना वाक्फ ज़िन्दगी की रूह नहीं है।

(अनुवादक शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
Vol.2 Thursday 9 March 2017 Issue No.10

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

इस्लाम और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर महापुरूषों के विचार

इन्सानी भाईचारा और इस्लाम पर महात्मा गांधी जी का ब्यान:

''कहा जाता है कि यूरोप वाले दक्षिणी अफ्रीका में इस्लाम के प्रसार से भयभीत हैं, उस इस्लाम से जिसने स्पेन को सभ्य बनाया, उस इस्लाम से जिसने मराकश तक रोशनी पहुँचाई और संसार को भाईचारे की इंजील पढाई। दक्षिणी अफ्रीका के यूरोपियन इस्लाम के फैलाव से बस इसलिए भयभीत हैं कि उनके अनुयायी गोरों के साथ कहीं समानता की माँग न कर बैठें। अगर ऐसा है तो उनका डरना ठीक ही है। यदि भाईचारा एक पाप है, यदि काली नस्लों की गोरों से बराबरी ही वह चीज है, जिससे वे डर रहे हैं, तो फिर (इस्लाम के प्रसार से) उनके डरने का कारण भी समझ में आ जाता है।''

(पृष्ठ 13, प्रो. के. एस. रामाकृष्णा राव की मधुर संदेश संगम, दिल्ली से छपी पुस्तक ''इस्लाम के पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल) में)

खुदा के समक्ष रंक और राजा सब एक समान

इस्लाम के इस पहलू पर विचार व्यकत करते हुए सरोजनी नायडू कहती हैं-

''यह पहला धर्म था जिसने जम्हूरियत (लोकतंत्र) की शिक्षा दी और उसे एक व्यावहारिक रूप दिया। क्योंकि जब मीनारों से अज़ादी दी जाती है और इबादत करने वाले मस्जिदों में जमा होते हैं तो इस्लाम की जम्हूरियत (जनतंत्र) एक दिन में पाँच बार साकार होती है, जब रंक और राजा एक-दूसरे से कंधे से कंधा मिला कर खडे होते हैं और पुकारते हैं, 'अल्लाहु अकबर' यानी अल्लाह ही बडा है। मैं इस्लाम की इस अविभाज्य एकता को देख कर बहुत प्रभावित हुई हूँ, जो लोगों को सहज रूप में एक-दूसरे का भाई बना देती है। जब आप एक मिस्री, एक अलजीरियाई, एक हिन्दुस्तानी और एक तुर्क (मुसलमान) से लंदन में मिलते हैं तो आप महसूस करेंगे कि उनकी निगाह में इस चीज़ का कोई महत्व नहीं है कि एक का संबंध मिस्र से है और एक का वतन हिन्दूस्तान आदि है।'' पृष्ठ 12

जार्ज बर्नाड शा का भी कहना है:

''अगर अगले सौ सालों में इंगलैंड ही नहीं, बल्कि पूरे यूरोप पर किसी धर्म के शासन करने की संभावना है तो वह इस्लाम है।''

'बर्नार्ड शा' अपनी किताब 'इस्लाम सौ साल के बाद' में कहता है: पूरी दुनिया शीघ्र ही इस्लाम को स्वीकार कर लेगी। अगर वह उसे उसके स्पष्ट नाम के साथ स्वीकार न करेतो उसे (किसी दूसरे) नाम से अवश्य स्वीकार करेगी। एक दिन ऐसा आएगा कि पश्चिम केलोग इस्लाम धर्म को गले से लगाएंगे। पश्चिम पर कई सदियाँ गुज़र चुकी हैं और वह इस्लामके संबंध में झूठ से भरी हुई किताबें पढ़ता चला आ रहा है। मैं ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में एक किताब लिखी थी किन्तु अंग्रेज कीरीतियों और परम्पराओं से हट कर होने के कारण वह ज़ब्त कर ली गई।

प्रोफेसर 'कीथ मोरे' अपनी किताब (The developing human)में कहते हैं: मुझे यह बात स्वीकारने में कोई कठिनाई नहीं होती कि क़ुरआन अल्लाह का कलाम (कथन) है,क्योंकि क़ुरआन में जनीन (गर्भस्थ) के जो विश्वरण दिए गए हैं उनका सातवीं शताब्दी की वैज्ञानिक जानकारी पर आधारित होना असम्भव है। एकमात्र उचित परिणाम (निष्कर्ष) यह है कि यह विवरण मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम को अल्लाह की ओर से व (ईश्वाणी) किये गये थे।

फ़ज़ाइले क़ुरआन मजीद

जमालो हुस्ने क़ुरआँ नूरे जाने हर मुसल्माँ है
कमर है चान्द औरों का हमारा चान्द क़ुरआँ है
नज़ीर उसकी नहीं जमती नज़र में फिक्र कर देखा
भला क्यों कर न हो यक्ता कलामे पाक रहमाँ है
बहारे-जावेदाँ पैदा है उसकी हर इबारत में
न वो खूबी चमन में है, न उस सा कोई बुस्ताँ है
कलामे-पाके-यज़दाँ का कोई सानी नहीं हरगिज़
अगर लूलूए अम्मा है वगरन लअले बदख्शाँ है
ख़ुदा के कौल से कौले बशर क्योंकर बराबर हो
वहाँ क़ुदरत यहाँ दरमान्दगी फर्क़े नुमायाँ है
मलायक जिसकी हज़रत में करें इक़रारे-ला-इल्मी
सुख़्न में उसके हमताई, कहाँ मक्दूरे इन्साँ है
बना सकता नहीं इक पाँव कीड़े का बशर हरगिज़
तो फिर क्यों कर बनाना नूरे हक का उस पे आसाँ है
हमें कुछ कीं नहीं भाईयो ! नसीहत है ग़रीबाना
कोई जो पाक दिल होवे दिलो जाँ उस पे क़ुरबाँ

एलान कारकुन दर्जा दोयम (द्वितीय)
सदर अंजुमन अहमदिया कादियान

सदर अंजुमन अहमदिया कादियान में लिपिक के रूप में सेवा के इच्छुक दोस्तों की सूचना के लिए लिखा जाता है कि:

1-उम्मीदवार की आयु 25 वर्ष से कम होनी चाहिए और उम्मीदवार की शिक्षा कम से कम 10 + 2 सेकंड डिवीजन कम से कम 45 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हों। इस से अधिक शिक्षा होने पर भी कम से कम सेकंड डिवीज़न या इस से अधिक नंबर हों।

2-जामिया अहमदिया कादियान के छात्र जो मैट्रिक पास करने के बाद जामिया अहमदिया में कम से कम दो साल का अध्ययन करके परीक्षा में सफल हो गए हों, आदरणीय प्रिंसिपल साहिब जामिया अहमदिया और नाज़िर साहिब तालीम की पुष्टि और सिफारिश के बाद नियमों के अनुसार दर्जा दोयम की परीक्षा में शामिल हो सकते हैं।

3-उम्मीदवार का अच्छी लिखाई वाला होना अनिवार्य होगा और उर्दू Inpage कंपोज़िनग जानना और गति कम से कम 25 शब्द प्रति मिनट होनी चाहिए।

4-केवल वे इच्छुक सेवा के योग्य होंगे जो सदर अंजुमन अहमदिया द्वारा लिपिकों के लिए लिए जाने वाली परीक्षा और इन्ट्रवियू में पास होंगे।

5-जो दोस्त सदर अंजुमन अहमदिया में लिपिक के रूप में सेवा के इच्छुक हों और उपरोक्त शर्तो को पूरा करते हों वे आवेदन कर सकते हैं। आवेदन फार्म दफतर दीवान सदर अंजुमन अहमदिया कादियान से मंगवा लें। आप के आवेदन प्रस्तावित फार्म पूरा करके दफतर दीवान में भिजवा दें। आवेदन फार्म मिलने पर परीक्षा का आयोजन किया जाएगा। इसकी घोषणा के बाद 2 महीने के भीतर जो आवेदन आएंगे उन्हीं पर विचार होगा।

6 पाठ्यक्रम परीक्षा आयोग कार्यकर्ता दर्जा दोयम के हर भाग में सफल होना अनिवार्य है जो निम्न लिखित है।

(1) क़ुरआन करीम सादा पढ़ना। पहला पारा अनुवाद सहित

(2) चालीस जवाहर पारे, अरकाने इस्लाम, सम्पूर्ण नमाज़ अनुवाद सहित

(3) किश्ती नूह, बरकातुद्दुआ, धार्मिक जानकारी।(4) अहमदियत की आस्थाओं पर लेख।(5) नज़म दुर्रेसमीन (शान इस्लाम) (6) अंग्रेज़ी 10 + 2 की योग्यता के अनुसार(7) हिसाब मीट्रिक के अनुसार सामान्य जानकारी।

7- लिखित परीक्षा में सफल होने वालों का इनट्रवियू होगा। सेवा के लिए इनट्रवियू में सफलता अनिवार्य है।

8- लिखित परीक्षा व इनट्रवियू दोनों में सफलता के मामले में उम्मीदवार को नूर अस्पताल कादियान से चिकित्सा निरीक्षण करना होगा और केवल वही उम्मीदवार सेवा के योग्य होंगे जो नूर अस्पताल के चिकित्सा बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार स्वस्थ और तंदुरुस्त होंगे।

9-यदि किसी उम्मीदवार का जमाअत की किसी असामी में चुनाव होता है तो इस स्थिति में उसे कादियान में अपने आवास की व्यवस्था स्वयं करनी होगी।

10-कादियान आने जाने का सफर खर्च उम्मीदवार के स्वयं अपने होंगे।

नाज़िर दीवान सदर अंजुमन अहमदिया कादियान

अधिक जानकारी के लिए संपर्क कर सकते हैं:

मोबाइल: 09815433760, 09464066686 कार्यालय: 01872-501130

E-mail: nazaratdiwanqdn@gmail.com

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad